P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-11* July- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

श्री राम और श्री कृष्ण साहित्य में जीवन कला और शिक्षा

सारांश

भगवान श्री राम और श्री कृष्ण भारत–भू पर गंगा और यमुना के समान स्तुत्य, पवित्र, आराध्य, पूज्य, प्राणाधार, जीवनदायी तथा अमर चरित्र है। ये साक्षात जग स्रप्ष्टा, जग पालक तथा जग रक्षक है। उनकी महिमा अपरम्पार है। वे स्वयं विष्णु के अवतार है और अवतारी पुरूष भी है। भारत का ही नहीं विश्व का कण–कण उनके श्वास–प्रश्वास से सुवासित है, उनके पद चिन्हों के स्पर्श से परिमार्जित और पूत है। यहां का पर्यावरण–वन–औषधि, गिरि–गहवर, सरिता–सागर, भू–अंतरिक्ष उनके कल्याणकारी वचनों से प्रतिध्वनित है। चन्द्र–सूर्य का प्रकाश तथा नक्षत्र मंडल उनकी लीलाओ, क्रीड़ाओं तथा जगत–उद्धारक महान कार्यों से चित्रांकित है। वलयाकार आकाश गंगा मानो उनके प्रताप को आवेष्टि करने के प्रयत्न का तिर्यकाकार सी हो गई है।

मुख्य शब्द : साहित्य, जीवन कला और शिक्षा।

सुनीता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
प्रेम चन्द मारकण्डा एस.डी कालेज फॉर वूमैन,
जालन्धर, भारत

प्रस्तावना

श्री राम और श्री कृष्ण दोनों महापुरूषों के बीच का युग का अन्तर होते हुए भी कालजयी सद्‌वृत्तियों के कारण ये सम नाम से हो गए है। फिर भी राम–राम ही है और कृष्ण–कृष्ण है। राम के समय नभमण्डल नीला था और कृष्ण के समय सामाजिक व्यवहार से वह श्याम सा हो चला था। संवेदनशील प्रकृति के कारण राम नील नभ के है तो कृष्ण श्याम मेघ से।

अध्ययन का क्षेत्र

राम काव्य यदि श्री राम के लोकरंजक, असुरनाशक, लोकनायक आदर्श पुरूषोत्तम राम रूप को प्रस्तुत करती है तो कृष्ण धारा कृष्ण के लोकरंजक, रसेश्वर तथा आनन्दकारी रूप को समाज के समक्ष रखती है दोनों ही काव्यधारा राम और कृष्ण रूप अपनी भक्ति भावना से युक्त आदर्श एवं रंजनकारी प्रवृत्तियों से निराश हिन्दू जनता को सम्बन्ध प्रदान करते है। इन्ही लोकमंगल एवं लोकरंजनकारी प्रवृतियों से निराश हिन्दू जनता को सम्बन्ध प्रदान करते है। इन्ही लोकमंगल एवं लोकरंजनकारी प्रवृतियों को लेकर भक्तिकाल में रामकाव्य तथा कृष्ण काव्य परम्परा का विकास होता है।

साहित्यावलोकन

भगवान श्री राम अपूर्व सौन्दर्य, शक्ति एवं शील के संगम है इनका स्वरूप ऐसा नहीं जो हमारे हृदय को क्षण भर के लिए एक क्षीण प्रकाश रेखा में आलोकित करके फिर अर्न्तध्यान हो जाए। भक्त अपनी अभिरूचि एवं प्रवृति के अनुरूप उनके भिन्न–भिन्न रूपों की उपासना किया करते है। कोई उनके 'बाल रूप' की उपासना करता है तो कोई उनके भयनाश का उपासक होता है और किसी को भी उनका 'काननचारी' रूप ही उपासना के अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। गोस्वामी तुलसीदास को उनका शरणाचारी रूप ही अत्यधिक प्रिय है। राम बजर से भी कठोर और फूल से भी कोमल है। मर्यादा पुरूषोतम भगवान श्री राम अनन्त सौन्दर्य सम्पन्न है। सभी भक्त राम का दर्शनकर आत्मा सुधि खो देते है और गद्‌गद हो जाते है। राम के अनुपम सौन्दर्य का इतना अधिक आकर्षण है कि वैरागी विदेह जनक सहित जनकपुर वासी उन मार्ग के ग्रामीण नर–नारी, कोमल–भील, पशु–पक्षी, सज्जन–दुर्जन, ऋषि–मुनि देवता सभी बरबस वशीभूत हो जाते है।

श्री राम का रूप ऐसा अपूर्व है कि स्वयं तो लोग देखते ही है दूसरों को भी देखकर नेत्रों का लाभ लेने की शिक्षा देते है। भगवान श्री राम स्वयं अनन्त है, उसी तरह उनकी महिमा, नाम रूप और गुणों की कथा सभी अपार एवं अनन्त है।

श्री राम का आचरण सर्वथा अनुशासित था मर्यादा था, उनका श्रेय 'आचार्यानुशासन' से अनुप्ररित था। जितने अनिन्द्य और श्रेयस्कर कर्म है, वे ही सेवनीय है जो उत्तम आचरण है वे ही अनुकरणीय है। राम शास्त्र वचनों के

लिए प्रतिबद्धता किसी राजनैतिक सिद्धान्त अथवा संकुचित, सीमित और निर्दिष्ट सामाजिक मूल्य से उत्प्रेरित नहीं है, वह सहज और स्वतः स्फूर्ति है। जीवन एक निश्चित विधान के अन्तर्गत प्राप्त हुआ है। शास्त्र उनकी सहजता में सहायक एवं उसकी सम्पन्नता के पूरक है। माता एवं पिता देव–भाव, भाइयों के लिए सहज स्नेह और समानता का आग्रह, पापी के प्रति अकलुश, प्रजा के लिए व्यक्ति निष्ठ, भाइयों का परिष्कार, गुरूओं में श्रद्धा ब्राह्मण एवं ऋषियों के सत्कृत्यों को आधारित करने का दृढ़ संकल्प, जनजाति, वनवासी एवं ग्रामीण के प्रति अगाध प्रेम भी मर्यादित और निश्चित विधान के प्रतिबद्ध दिखाई देते है। उनके आचरण में 'उच्छृखंलता और स्वेच्छाचारिता' के लिए कोई स्थान ही है। उनकी इसी विधानपरकता ने उन्हें व्यक्तिवाद के सीमित दायरे से उठाकर द्वन्द्वात्मक भौतिक वाद के चिन्तन को ही मूलाधार मानकर चलने वालों समाजवाद ऊपर की ओर हाथ उठाए 'बौने' के समान दिखाई देता है।

श्री राम की कथा भारत की आदि कथा है। ऋषि बाल्मीकि से भी पूर्व आख्यानों में प्रचलित रही है। संस्कृति सदैव आदर्श की स्थापना करती है और यह प्रत्येक क्षेत्र में होती है पारिवारिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सभी दृष्टियों में एक आदर्श उत्तर–दक्षिण प्रसार का रूपक माना गया है। संस्कृति के प्रसार के लिए निर्मित इस रूपक में सभी प्रकार के सांस्कृतिक आदर्शो की स्थापना की। लोक कथाओं में सम्पूर्ण कथा का विकास भी यही प्रदर्शित करता है, लोक कथाओं के पीछे सदैव निश्चित विचार होता है युग जीवन का भी निदर्शन करती है और उसका द्वारा सशक्त नैतिक मानदण्डों की स्थापना हुई है जो आज भी स्वीकृत है। इसका मुख्य कारण है उसका स्थायी मूल्यों जैसे सत्य, प्रेम, दया, नम्रता आदि पर आधारित होना व्यक्ति समाज से निरपेक्ष और सापेक्ष कथा और कितना रह सकता है। यह सामजस्य यहां चित्रित हुए बताना होगा कि उसमे निर्देशित आदर्शो का स्वरूप क्या है।

मानव की स्वतन्त्र सत्ता है इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता किन्तु स्वीकार भी एक सीमा तक किया जा सकता है। जहां तक सामाजिकता की क्षति न हो। श्री राम कथा के समक्ष सभी प्रमुख पात्रों का निजी व्यक्तित्व है। राम, भरत, लक्ष्मण, दशरथ, सीता कौशल्या, कैकयी सभी में व्यक्तिगत रूचि है, भावनाएं है, किन्तु वे उनका समंजन करते है चाहे समाज के सम्मुख व्यक्ति को छोटा होना पड़े। अपने भीतर गुणों का चरम विकास राम भी है भरत में भी है। श्री राम आरम्भ में ही एक सर्वश्रेष्ठ राजकुमार ही है फिर भी वे स्नेह में, त्याग में, कर्मनिष्ठा में सदैव वे विशिष्ट है। भावनात्मक आवेग उनमें है किन्तु वही तक जहां तक सामाजिकता की हानि न हो। वनवास प्रसंग में व्यक्ति के रूप में दशरथ विलाप कर रहे है, लक्ष्मण क्रोध कर सकते है, अन्य लोग विरोध कर सकते किन्तु उससे आगे बढ़ कर राम वन गमन नहीं रोका जा सकता। कौशल्या सरल हृदय माता है किन्तु उसका स्नेह मार्ग का अवरोध नहीं बनता। रामकथा के ये सभी पात्र व्यक्ति के रूप में सदगुणों का चरम विकास प्रदर्शित करते है। वह सत्य प्रेम, तप इत्यादि से सयुंक्त जीवन ही राम कथा में दृष्टव्य है।

अयोध्या का राज परिवार एक आदर्श परिवार की स्थापना करता है। राम कौशल्या के पुत्र होने पर भी, कैकयी के अधिक प्रिय है, भरत कौशल्या के। इस परिवार में पूर्णतः आदर्श दाम्पत्य की स्थापना है ऐसा नहीं। राजा दशरथ ने तीन विवाह किए, बाद में कैकयी के प्रति इनमें अधिक आर्कषण भी है। रामायण का कैकयी का भवन भी अन्य रानियों से श्रेष्ठ है। कैकयी के सम्मुख दशरथ का दाम्पत्य आदर्श नहीं। हां राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न दाम्पत्य का आदर्श प्रस्तुत करते है। राम और सीता को सर्वाधिक चित्रित किया गया है। आज की भारतीय नारी का आदर्श सीता ही है। लक्ष्मण और उर्मिला के दाम्पत्य को यद्यपि बाद में स्थान मिला है तथापि उसमें भी गम्भीर्य है। साधना है, भरत का दाम्पत्य और भी उपेक्षित है। राम एक पत्नीव्रता का आदर्श सामने रखते है। पंचवटी के लक्ष्मण भी उसका महत्व स्वीकार करते है–

'नारी के जिस भव्य भाव का, स्वाभिमान भाषी हूँ मैं
उसे नरों में भी पाने का, उत्सुक अभिलाषी हूँ मैं।'

सतीत्व का आदर्श सीता है। पुत्र धर्म का आदर्श राम। 'माता–पिता' को सन्तुष्ट कर सकना ही पुत्र धर्म है।' माता–पिता का आदेश–तर्क–वितर्क का विषय न होकर निर्विकार मन से पालन किए जाने योग्य है। मातृत्व की आदर्श कौशल्या है जिनके व्यक्तित्व में सरल मातृत्व के अतिरिक्त कुछ नहीं। पुत्रों ही के प्रति नहीं पुत्र–बंधुओं के प्रति भी उनमें नही वात्सल्य है सीता की कोमलता कौशल्या की चिंता है। राम वन में है, कौशल्या का कोमल वात्सल्य चिंतित है–

'काऊ विरछ तर भीजत, हे राम लखन दोऊ भैया।'

वे बैठी बैठी सगुन मना रही है। दशरथ में हमें इसी वात्सल्य के दर्शन होते है। राम के प्रति यद्यपि उनका विशेष मोह है फिर भी वे स्वीकार करते है कि वृद्धावस्था की संतानो से उन्हे अधिक स्नेह है। सीता के वन जाने पर उनकी सकुमारता की उन्हें चिन्ता है।

अयोध्या के इस राज्य परिवार में सेवकों तक का उचित महत्व है। उन्हें कष्ट न हो इसका सभी ध्यान रखते है। सांकेत के भरत माण्डवी की कुटी में अधिक स्नेह करने से रोकते है क्योंकि भृत्यों को कष्ट होगा।

गुरुजन भी परिवार के ही सदस्य है, सुमन्त का प्रवेश अन्तपुर में भी है और वशिष्ट तो सभी को आदेश देने में और आवश्यकतानुसार निर्णय लेने में सक्षम है जैसा वे दशरथ को मृत्यु के पश्चात करते है।

पारिवारिक सम्बन्धों का आदर्श तो यहां है ही। राम–लक्ष्मण की जोड़ी आज भी देखी नहीं तो सुनी तो जाती है।

अथर्ववेद द्वारा प्रतिपादित हृदय की एकता, मन की एकता और आपस में द्वेष का त्याग यहां परस्पर पराकाष्ठा के प्रेम से सवर्द्धित है। राष्ट्र तथा समाज के उत्थान का जो प्रयत्न राम कथा में है उसके लिए आधारभूत इकाई पूर्णतः मैत्री, बन्धुत्व तथा शान्ति आवश्यक है। जिसके अभाव में उसी विरह के दर्शन होते है जो वनवास प्रसंग में दिखाई देता है।

श्री राम कथा का आदर्श समाज है जहां शारीरिक, मानसिक अथवा दैवी कष्ट किसी को नही है। सभी प्रसन्न है। सभी अपने–अपने कार्यों को करते है न कहीं द्वेष है न संघर्ष। यद्यपि यह व्यवस्था वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित है। सब वर्णाश्रम के अनुकूल आचरण करते है वेद के अनुकल व्यवहार करते है। समयानुकूल परिवर्तित है। सब वर्णाश्रम के अनुकूल आचरण करते है वेद अनुकूल व्यवहार करते हैं। समायानुकूल परिवर्तित विचारधारा के कारण यह विचारधार आज उपर्युक्त नहीं लगती। वर्णाश्रम व्यवस्था है किन्तु उसमे अस्पृश्यता की गन्ध नही। राम का गृह–शबरी, काल, किरात, भील आदि से मृदु सम्बन्धी इसी रुप को प्रदर्शित करता है। राम के सान्निध्य में वन्य जातियां संस्कृति हो गई है। उन्हें मनुष्यसमझ कर ही उन्हें देखा, पहचाना जा सकता है। यह समाज उचित और अनुचित के निर्णय में सक्षम है। वह वेद के समाज अनाचार का विरोध कर सकता है। इस सामाजिक व्यवस्था में न कही तनाव है न द्वन्द्व। वेद की वाणी उच्चरित वहां होती है। तपोवन और नगर वहां परस्पर सहयोग करते है। प्रत्येक कर्तव्य है प्रत्येक के अधिकार। वह समाज इतना व्यवथित है, सुखी है कि राम वैकुण्ठ की तुलना से उसे महत्त्व देते है, भूतल पर वह स्वर्ग है।

प्राचीन वर्णाश्रम व्यवस्था राम कथा का सामाजिक आदर्श है। उसके भीतर स्नेह है फलतः वहां न कटुता न विरोध। वह व्यवस्था कर्मानुरूप है ब्राह्मण, ऋषि, मुनि, तपो वनों में रह सकते है। अध्ययन और शास्त्रों के निर्णय में समय व्यतीत करते है। उस ब्रह्मतेज का सब आदर करते है। उसकी इच्छा का सदैव समादर होता है। क्षत्रिय रक्षा का राज्यपालन का दायित्व संभाले हुए है वैश्य व्यापार और शुद्र सेवा की, किन्तु अन्ततः वे सब मानव है और यही कारण है विभिन्न वर्गों में परस्पर स्नेह है।

श्री राम कथा का चित्रित वन्य समाज अशिक्षित है किन्तु उसमें स्नेह, सरलता है और वाक्चातुर्य है। वनमार्ग में जाते सुकुमार राजपुत्रों को देखकर ग्राम बन्धुओं के मन में स्नेह उत्पन्न होता है तथा कैकयी के प्रति रोष।

सीता से उनका सम्बन्ध वे जानना चाहती है और अत्यन्त चातुर्य के साथ प्रश्न कर बैठती है। उसी चातुर्य से सीता उन्हें उत्तर देती है– नेत्र भंगिमा से। ये दोनों प्रसंग सभी सवद्ध रचनाओं में है। इस प्रकार से सामाजिक और ग्रामीण दोनों ही समाज यहां लिए गये है और सरल जीवन वहां का आदर्श है।

धार्मिक दृष्टि से एक वर्ग विशेष के विचारों को श्री राम कथा में आश्रय मिला है। वर्णाश्रम धर्म ही राम साहित्य और ग्रामीण दोनों ही समाज यहां लिए गये है और सरल जीवन वहां का आदर्श है।

धार्मिक दृष्टि से एक वर्ग विशेष के विचारों को श्री राम कथा में आश्रय मिला है। वर्णाश्रम धर्म ही राम साहित्य में स्वीकृत है। धर्मानुकूल आचरण का वहां महत्व है इसीलिए वह मर्यादा की कथा है। वह धर्म लोक वेद सम्मत है। उस धर्म में प्रातःकृत्य यज्ञ, तपोवन का जीवन प्रधान है। इहलोक से अधिक परलोक को महत्व मिला है। प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार में परलोक की चिन्ता है। राम साक्षात विष्णु के समान है। इस दृष्टि से स्पष्ट है कि वैष्णव मत स्वीकृत आदर्शों की यहां स्थापना है।

श्री राम कथा में धर्म शास्त्र है वह नियमन करता है, शासन करता है धर्म की रक्षा करना ही क्षत्रिय का धर्म है अतः ऋषि यज्ञ की रक्षा कथानायक का दायित्व है। कथा करणीय है? क्या नही? क्या स्वीकार योग्य है? क्या त्याज्य? इसका निर्णय धर्म करता है। अपने मत, परलोक सम्बन्ध धारणाओं में वे दृढ़ है।

श्री राम कथा में आरम्भ में धर्म के सार्वभौमिक मूल्यों की स्वीकृति है। राम की आज्ञाकारिता और त्याग, भरत का त्याग, प्रेम और भक्ति, हनुमान की भक्ति, लक्ष्मण का सेवक धर्म, बन्धुत्व, कौशल्या का मातृत्व मानवता के उच्चतम मूल्यों द्वारा स्वीकृत एवं प्रशंसित है। फलतः रामकथा ने एक ऐसा सार्वभौम–धार्मिक आदर्श प्रतिपादित किया जो सम्प्रदाय विशेष से सम्बद्ध नहीं था। किन्तु बाद में अनेक सम्प्रदायों से उसे जोड़ लिया गया। जैन और बौद्ध जसे नास्तिक दर्शनों तथा वष्णव आस्तिक मत में राम का मिलना इसका प्रमाण है।

श्री राम साहित्य शैव और वैष्णव संस्कृति के संघर्ष और उनके साम्राज्य की कथा है। राक्षस शैव है, राम शैव है, राम वैष्णव है, किन्तु राम विजयी होकर भी विभीषण का राज्य नहीं लेते अपितु राम विभीषण में परस्पर सौहार्द स्थापित होतो है जो इस संघर्ष की सुखद परिणति का सूचक है। मानस में तो राम शिव के और शिव राम के भक्त ही है।

राम राज्य की कल्पना शासन की आदर्श कल्पना है। यद्यपि वहां प्राचीन पद्धति को ही स्वीकृति मिली है अतः राजतन्त्र की स्थापना है किन्तु यह राजतन्त्र निरंकुश साम्राज्य नहीं है। शासक के मदान्धता में प्रजा वर्ग की विस्तृत कर सकने की चेष्टा नहीं है।

राज परिवार का आदर्श प्रजा के सम्मुख है। उसकी प्रसन्नता में प्रजा प्रसन्न है। दशरथ के यहां पुत्रों का जन्म होता है कि प्रत्येक व्यक्ति आनन्दमग्न है। मानो उसी के परिवार में यह सुखद घटना घटी है। राम के वनवास का विरोध प्रजा करती है। कैकयी को उसके अनुचित कृत्य के लिए प्रताडित कर सकती है। वन जाते राम को रोकने का प्रयत्न करती है। इस सबके मूल से स्नेह है, प्रजा राजा बीच के मधुर सम्बन्ध है। वह राजतन्त्र इसलिए प्रजातन्त्र के निकट है। राजा का आदर्श मुख। वह सुख की भांति सबकुछ ग्रहण कर विभिन्न अंगो का विवेक सहित पालन करता है। राज्य के नियमों से प्रजा ही नहीं राजा भी बाध्य है।

'शासन सब पर है इसे ने कोई भूले
शासक पर भी वह भी ब फूल कर ऊले।'

राज परिवार में प्रजा की आलोचना, प्रशंसा दोनों का पत्र है। राजा का कर्त्तव्य भौतिक ही नहीं प्रजा की आत्मिक उन्नति भी है। प्रजा सुखी हो, वहां कोई मानसिक चिन्ता भी न हो भले ही राजा को कष्ट हो। लोक साधन राजा का उद्देश्य है चाहे उसके लिए अपार मानसिक कष्ट के साथ सीता को निर्वासन भी करना पड़े।

समता शासन की अभिनव पद्धति का प्रयोग भरत के नन्दिग्राम निवास में किया गया है। कृषि प्रधान देश के प्राण उसके ग्रामों में बसते है अतः उसके राज्य

का केन्द्र भी 'नन्दिग्राम' है। शासन विहीन राज्य का चौदह वर्षो तक सुचारू रूप से चलते रहना। आज भी आश्चर्य का विषय है। यही दिव्य राजनैतिक आदर्श यहां उपस्थित किया है।

इस प्रकार राम काव्य में व्यापक आदर्शों की स्थापना है। उसका धर्म सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित सर्व–स्वीकृत धर्म है, उसके राजनैतिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा वैयक्तिक आदर्श सार्वकालिक है आज भी वे उसी प्रकार ग्राहय और स्वीकार किये जाने योग्य है। यही कारण है कि लोक परम्परा में इस सांस्कृतिक विजय की उद्घोषणा हमें मिलती है। हमारे पर्व राम से सम्बद्ध है हमारे लोक गीतों में राम और उनका परिवार दिखाई देता है। हमारे प्रमुख पर्व–दशहरा और दीपावली राम के विजय के उत्सव है। दशहरे में इस विजय की उद्घोषणा है और दीपावली में हर्षोल्लास–अपनी सांस्कृतिक जय के पश्चात् लौटे राम का अभिनन्दन रामनवमी में राम के जन्म का उल्लास है तो होली के उल्लास में, आनन्दमय, सौहार्द तथा बन्धुत्व भरे अवसर पर फागुनी रंग फाग खेलते अवध की गलियों में घूमते सामने आते है।

इस प्रकार राम राज्य एवं कृष्ण राज्य इस मंगलमय समाज का उच्चतम आदर्श है। इस राज्य में समस्त प्राणियों को आर्थिक विषमता, दैहिक पीड़ा, मानसिक अर्न्तद्वन्द्व एवं अन्य चिन्ताओं से पूर्ण मुक्ति मिलती है। व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अभावों से पीड़ित नहीं होता था। इस समाज का अन्तिम मूल्य नैतिक कल्याण या लोक मंगल की भावना है। इसके संस्थापक राम (रामराज्य) एक और जहां राम कृष्ण राज्य का वर्णन मिलता है दूसरी ओर उसी के ही मात्रा में अपवित्र, गर्हित एवं अनाचारपूर्ण राज्य का भी संकेत मिलता है। रावण या कंस का राज्य इसी का प्रतीक है।

भारतीय समाज के समक्ष श्री कृष्ण के नानाविधिरूप है। इन नानाविध स्वरूपों का होना उनकी चंचल वृति के कारण स्वाभाविक भी था। श्रद्धालु भक्तों के लिए वे साक्षात विष्णु के सोलह कला सम्पन्न अवतार है। वे परब्रहमा जगत नियन्ता है। दार्शनिक के लिए वे महान् दार्शनिक तथा युग–दृष्टा है। आस्तिकों के लिए वे मूर्तिमान संरक्षक है। साकार उपासको के लिए वे सहज सुलभ दृष्यमान मूर्ति में निवास करते है। निराकार मान्यता वाले समुदाय के लिए वे अदृश्य सार्वभौम शक्ति है। योगविद्या में विश्वास रखने वालों के लिए वे योगीराज है।

श्री कृष्ण रसिक गोपियों के लिए रस राज है, गोपीवल्लभ है, नर्तक है, नटराज है, कुंज विपिन बिहारी है, बांसुरी वादक है, स्नेही है, विरह तपन का शमन करने वाले है। मनोहर, कमलनेत्री है, वक्र भंगिमा वाले है और उनकी समस्त मनोकामना पूरी करने वाले है।

श्री कृष्ण गोपी के लिए सखा है, उनके साथ धेनु चरावनहार है, बाजी हारने पर पीठारोहण की अवसरी देने को प्रस्तुत है, अपनी बारी पर गाय हांक लाने के लिए उद्यत है, भूख लगने पर ढाक–पात के दोने में दूध निकालने और पीने के लिए कुशल है, घर से आई छाछ को मिल बांट कर खाने वाले उदारमना है, माखन चोरी में सहभागी बनने वाले है, दधि लूटने में दक्ष हस्त है और आपत्ति आने पर सबको संरक्षक देने में सक्षम है।

श्री कृष्ण वृन्दावन–मथुरा निवासियों के लिए गोपाल है गोवंश संवर्धक है, गोवर्धनधारी है, आततायियों के संहारक और दीन दुखियों के तारक तथा उपकारण है, भूमि पुत्र है, जननायक है और निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले कर्मठ नागरिक है।

श्री कृष्ण सेना के कुशल संचालक, योद्धाओं के लिए ये रण–कुशल और रण बांकुरे योद्धा है। सेना के कुशल संचालक है, नित्य नवीन व्यूह रचना विद्या के विज्ञ है, अहंकारियों के अंहकार का मर्दन करने वाले है, रण के विधि विधानों के ज्ञाता है, नाना आयुधों के प्रयोग में कुशल तथा शत्रु के आयुधों को तृण तुल्य नष्ट–भ्रष्ट करने के लिए तत्पर है।

श्री कृष्ण नीतिज्ञों के लिए कुटनीतिज्ञ है। आचार–व्यवहार से नीति–नियमों का निर्माण करने वाले तथा अवसरानुकूल उन्हें अद्यतन करने में पटु है।

श्री कृष्ण गुरूओं के लिए आदर्श शिष्य, कुशाग्रबुद्धि, अल्पकाल में शस्त्र–शास्त्र विद्या ग्रहण करने वाले, गुरू दक्षिणा में बल–बुद्धि का प्रयोग करने में प्राण–प्रिय, सुदामा से सामान्य अर्धवर्ग के बालक के साथ आश्रम के लिए लकड़ी चुनने में निःसंकोची सहपाठी है।

श्री कृष्ण मित्रों के मित्र अपने भोजन का भाग दूसरे द्वारा ग्रहण कर लिए जाने पर भी प्रसन्नचित, राज सिंहासन पर विभूषित होने पर भी घर आए मित्र सुदामा के भरी सभा में पद प्रक्षालन में गौरवान्वित होने वाले तथा दूर दृष्टि स्वभाव के स्थान पर महल–अटारी का निर्माण करने वाले ओढ़र दानी स्वभाव के धनी है।

श्री कृष्ण वसुदेव–देवकी के लिए लाडले पुत्र, जन्म काल से अनहोनी घटनाओं के विधायक, मातृ–पितृ उद्धारक, सहोदरों के तारक तथा अवतारी पुत्र है।

श्री कृष्ण नन्द–यशोदा मों के आंगन का गौरव, अपनी स्नेहमयी लीलाओं से उपकृत करने वाले, बाल सुलभ अठखेलियों से कभी प्रमुदित और कभी खिन्न मन करने वाले तथा ग्वाल–बाल–सम–बुद्धि के कारण नित्य नई राड़ रोपने वाले है। श्री कृष्ण बड़े हठी, शीघ्र रूठने–मानने वाले और अपने हर व्यवहार से माता–पिता को चमत्कृत कर देने वाले बालक है।

श्री कृष्ण साधारण ब्रजवासियों के लिए कान्ह, कन्हैया, कनुवर, माखनचोर, अहीर और धेनु के चरैया है।

श्री कृष्ण बहु आयामी व्यक्तित्व के कारण लेखकों तथा कवियों का भी आदर्श पात्र बने। ऋषि वेद व्यास उनके चरित्र पर मोहित थे। श्री मद्भागवत में इन्ही श्री मन्नारायण के चरित्र का उल्लेख करने से उन्हे आत्मिक शांति मिली। व्यास के द्वारा लिपिबद्ध श्री कृष्ण का गीता उपदेश आज भी विद्वानों का कंठहार है। संस्कृत के विद्वान श्री कृष्ण का चरित्र का उल्लेख करके प्रसिद्ध हुए है। तुलसीदास, राम के अनत्य भक्त होते हुए भी श्री कृष्ण रूप माधुर्य के वर्णन का लोभ संवरण नही कर सके। सूरदास अष्टछाप के कवियों के साथ श्री कृष्ण के सम्मुख इस प्रकार नत मस्तक हुए ऐसा लगा मानो अपने को एक अंग मात्र बनाकर शेष सात भक्त कवियों के साथ साष्टांग प्रणाम कर रहे है। जगन्नाथ, प्रसाद, रसखान, मीराबाई, रत्नाकर आदि कभी गोपियों के साथ उलझ कर और कभी भोले बनकर, श्री कृष्ण के रुप में माधुर्य का

दर्शन करते है। तो कभी बात में से बात निकालकर बातों को लम्बी कटुबतियाते नहीं अघाते।

श्री कृष्ण के लौकिक और अलौकिक मानवीय और दिव्य दो रुप है। लौकिक रुप में श्री कृष्ण युगमानस के सार्वभौम संकल्प के प्रतीक है, युग के सुत्रात्मा है। भारतीय संस्कृति के विकास के इतिहास में कोई भी संस्कृति निर्माता या युगनायक ऐसा बहुमुखी व्यक्तित्व में सम्पन्न नहीं है। कृष्ण का मानवीय रुप इतना विकसित है कि उनका ईश्वरत्व से अभेद दिखाई देता है, कृष्ण का मानव व्यक्तित्व अत्यन्त वैविध्यपूर्ण समृद्ध और आकर्षक है, वे अपने युग के सम्पूर्ण लोकमानस के आकर्षण के केन्द्र बिन्दु सिद्ध होते है। महापुरूष तीन प्रकार के होते है। चिन्तक भाव प्रधान और कर्मठ व्यक्तियों का निर्माण होता है। श्री कृष्ण में ज्ञान शक्ति, इच्छा शक्ति और क्रियाशक्ति का चरमोत्कर्ष दिखाई पड़ता है इसीलिए वे चिन्तक, अनुरागी और कर्मठ महापुरूष श्री कृष्ण एवं युग प्रवर्तक और आनन्दवाद का पूर्ण समन्वित रूप प्रकट हुआ है।

श्री कृष्ण के अलौकिक स्वरुप की अभिव्यक्ति उनके अवतारी रूप में हुई। कृष्ण का दिव्य रूप वह है जहां वे सच्चिदानन्द है। उनकी विभिन्न लीलाओं के बीच से उनका लीला रूप विकसित हुआ है। अवतारी रूप में उनके जन्म और कर्म दिव्य है। वे लीला पुरूषोतम, रसरूप सच्चिदानन्द ब्रह्म के रूप में वे इस जगत् के भक्तवत्सल और असाधु अहेरी। लीला विग्रह में उनके दो रूप है– पहला ऐश्वर्यमय और दूसरा प्रेममय। श्री कृष्ण के प्रेममय रूप से ही उनकी मार्धुयमयी लीला सम्पन्न होती है।

श्री कृष्ण का चरित्र अनेक जीवन्त मानवीय संभानाओं व अपेक्षाओं का पुंज है। उनके रसज्ञ योगेश्वर एवं लोकरंजक स्वरूप ने अनेक कलाकारों, योगियों और लोक रक्षकों को मोहित किया है। उनकी बांसुरी से मात्र गोपियां ही मोहित नहीं हुई, वरन् अनेक योगी मोहित होकर ब्रजभूमि में लोटने लगे।

उनके जीवन मूल्यों की चरम व्यापकता ने उन्हें किसी विशेष समुदाय, जाति या धर्म तक ही सीमित नहीं रहने दिया। सभी वर्गो जातियों और धर्मों से वे आकर्षण बिन्दु बने। ताज व रसखान जैसे मुसल मान कवि भी उनके प्रतिश्रद्धा बनाते रहे तथा ताज ने तो यहां तक घोषणा कर दी कि – हो तो मुसलमानी पै हिन्दुआनी है रहूंगी मैं। यह श्री कृष्ण के जीवन्त चरित्र का ही कारण रहा है कि उनके आख्यान का भारत के कोने–कोने में अंकन और चित्रण हुआ है। किसी को उनकी बाल क्रीडाएं भाई, कोई उनकी रास क्रीडा पर मोहित हुआ तो कोई उनके कुरक्षेत्र के कर्मयोगी स्वरुप के समक्ष नतमस्तक हो गया। कृष्ण भारत की गंध और मिट्टी में मिलकर अनेक भटके हुओं को शन्ति देते रहे। अनेक तत्वों चितज्ञों की जिज्ञासाओं का शमन करते रहे। तो अनेक थके हुओं का जीवन रण में जुझने तो प्रेरित करते रहे।

रास लीला की भांति रासलीला का प्रदर्शन भी अनेक क्षेत्रों में बड़ी आस्था के साथ किया जाता है। भगवान श्री कृष्ण और उद्धव की कथा, गोपियों से उनकी प्रेम की कहानियों तथा ब्रज और गोकुल की धरती से उनका सम्बन्ध सब कुछ इन लोक कथाओं में तथा कृष्ण से सम्बन्धित विभिन्न प्रसंगो में विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्त हुआ है।

विभिन्न विद्धानों ने कृष्ण से सम्बन्धित इन कथाओं में कही उनके बाल जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है जो कही ब्रज भूमि और गोकुल से उनकी लीलाओं का वर्णन है। कहीं इन कथाओं में वंशी वट का चित्र दिखाई पड़ता है तो कहीं यमुना के किनारे रचाए जाने वाले रास की झांकी मिलती है कहीं गोप–गोपियां है तो कहीं वंशाी की धुन मिठास का घोलते हुए जान पड़ते है। इस प्रकार श्री कृष्ण के विषय में उस माखन–मिस्त्री युक्त व्यक्तित्व का स्मरण और आस्वादन करने के मोह के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। कहीं कृष्ण का विराट रूप सामने आता है। तो कहीं उनका लोकोपकारक, जनकल्याणकारी रूप के दर्शन होते है। कहीं गीता के उनके गहन सन्देश को सहज वाणी मिली है, तो कहीं इन कथाओं में भारतीय सभ्यता और संस्कृति की सहज वाहिक मान्यताओं और आदर्शों का समावेश हुआ है। इन्होंने भागवत पुराण अनेक संहिताओं, महाभारत आदि महान् ग्रन्थों मे सलभ श्री कृष्ण सम्बन्धी कथाओं के अनेक प्रसंग प्रस्तुत किए है और बड़े रोचक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

वायु मण्डल को वर्तमान रुप में पहुंचने में करोड़ो वर्ष लगे है और जिस प्रकार पृथ्वी, नक्षत्रों तथा हमारे कार्य व्यापारों के परिणामस्वरूप पर्यावरण में प्रदूषण के कारण इनका ह्रास क्रम आरम्भ हो गया है इसी प्रकार 'कृष्ण' नाम आद्य–अन्वेषण तथा उनसे सम्बन्धित कथा उपकथाओं के विकास का एक सुदीर्घ घटना क्रम है। यदि श्री कृष्ण कथा का सरिता का नाम दे तो यह कहीं रेखा रुप में, कहीं महानद के रूप मे, नही निर्मल स्वच्छ धारा स्वरूप तो कही वर्षा काल के जल के समान अंकित भी हुई। जहां श्री कृष्ण की कथा भारत के पूर्व–पश्चिम तथा दक्षिण–उतर अचंलो को आकर्षित करती है वहीं यह नवयोजना की तरह अपने पुलिनों और छोर को तोड़कर विदेशों तक प्रसादोदक के समान वहां के समाज को पुनीत–पावन बना रही है।

निष्कर्ष

इस प्रकार राम काव्य अपनी लोक संग्रहकारी प्रवृति को लेकर अवतरित हुआ। हिन्दी का राम भक्ति काव्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में घटित समस्त आदर्श तथा मर्यादाओं काव्य परिपाक हआ है। राम काव्य अपने युग की डगमगाती हुई राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं दार्शनिक परिस्थितियों के मध्य कर्त्तव्य एवं जीवन के आदर्शों को समाज के सम्मुख रखता है। कृष्ण काव्य की रागानुगा भक्ति की विचारधारा भारत में अति प्राचीन है। बौद्ध धर्म का प्रचार से पूर्व ही रामभक्ति का उदय हो चुका था। जिन दिनों बौद्ध धर्म का अनतसलिला के रूप में वर्तमान थे।

इस प्रकार भक्ति काल सगुण धारा के वियों ने श्री राम और श्री कृष्ण की लीला करने वाले विष्णु के अवतार के रूप में ग्रहण किया। इसका कारण यह था कि नाथ पन्थी निर्गुणिओं के उपदेश और योग सम्बन्धी शरीर को कष्ट देने वाले उनके जटिल कार्य साधारण जनता के हृदय में माधुर्य की पर्यास्वनी धारा को प्रवाहित करने में

असमर्थ रही। राम के मर्यादावादी रूप की अपेक्षा रसेश्वर कृष्ण के प्रेममय रूप ने जनता को अपनी ओर अधिक आकृष्ट किया। कृष्ण भक्त कवियों ने साकार सगुण काव्य के रूप में विश्वास करके उनकी लीला का गठन ही अपनी साधना का प्रमुख लक्ष्य बनाया। श्री कृष्ण भक्ति की रंजनकारी प्रवृति के कारण ही कृष्ण काव्य को अधिक व्यापकता मिली।

इस प्रकार से कृष्ण भक्ति में न केवल आत्मा या बुद्धि के प्रकाश में परमचेतना का साक्षात्कार किया बल्कि रागात्मक एवं ऐन्द्रियवृति को भी उसके प्रकाश डुबाकर उसे महाश्वेता ही नहीं रहने दिया बल्कि कृष्ण के मोर मुकुट की भांति इन्द्रधनुषी बना डाला। मानव प्रवृति का कोई अंग छोड़ा नहीं गया। मानव की भावप्रव्रता ऐन्द्रियता को भी स्थान मिला। कृष्ण भक्ति आन्दोलन ने देह, प्राण, मन को उनके पंक से निकालकर कृष्ण की चिदात्मक क्रीड़ास्थली में पहुंचाया। और राम काव्य में राम व्यक्ति चरित्र न होकर सामाजिक मर्यादाओं और मानव मूल्यों के सर्वोतम प्रतीक है। राम काव्य अपनी मर्यादाओं, शालीनता के साथ अपनी आदर्शवादी सीमाओं में सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति दी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मध्यकालीन भारतीय इतिहास एवं संस्थाए–डॉ. विश्वेश्वर स्वरुप भार्गव पृ. 8

ब्रज भाषा के कृष्ण काव्य में मार्धय भक्ति–डॉ. रुप नारायण पृ. 66

मध्कालीन भारत का संक्षिप्त इतिहास– ईश्वरी प्रसाद पृ. 69

मध्यकालीन भारतीय संस्कृति–दिनेश चन्द्र भारद्वाजपृ. 13

हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास– राम बहोरी शुक्ल पृ. 112

हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास– आ0 चतुर सेन पृ. 281

रामानन्द सम्प्रदाय और हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव– डॉ बदरी नारायण श्रीवास्तव पृ. 30

मध्यकालीन भारतीय संस्कृति– गौरी शंकर हीरा चन्द ओझा पृ. 97

ब्रज भक्ति काव्य के मूल्य स्त्रोत– दुर्गा शंकर मिश्र पृ. 103

राधा वल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य– डॉ वियजेन्द्र स्नातक पृ. 51

कृष्णकाव्य की परम्परा और सूरदास का काव्य– डॉ वियजेन्द्र स्नातक पृ.13–14

भक्ति सन्दर्भ (जीव गोस्वामी) टीका श्री श्याम दत्त पृ. 85

कृष्ण कथा कोश– डॉ. श्याम शरण गौड पृ. 80

कृष्ण भक्ति काव्य– डॉ जगदीश गुप्त पृ. 107

गोस्वामी तुलसीदास की समन्वय साधना–व्यौहार राजेन्द्र सिंह पृ. 45

तुलसीदास स.– डॉ उदयभानु सिंह पृ. 58

तुलसीदास आधुनिक वातापन– डॉ रमेश कुन्तलमेघ पृ.126

तुलसीदास आज के सन्दर्भ में– युगेश्वर पृ. 92

रामकथा–कामिला बुल्क

रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय– भगवती प्रसाद सिंह– पृ. 88

राम भक्ति साहित्य मधुर उपासना–भुवनेश्वर मिश्र माधव पृ. 114

हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका राम नरेश वर्मा पृ. 113

राम भक्ति शाखा राम निरंजन पाण्डेय–पृ. 97